पाठ 19. हृदय परिवर्तन

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को यह सीख देता है कि हिंसा से अहिंसा का स्थान, घृणा से प्रेम का स्थान तथा दंड से क्षमा का स्थान हमेशा ऊपर होता है। इसलिए मनुष्य को अहिंसा, प्रेम और क्षमा के मार्ग पर चलना चाहिए।

पाठ का सारांश

यह कहानी महात्मा बुद्ध और अंगुलिमाल डाकू के बारे में है। अंगुलिमाल नाम का एक डाकू अपनी इष्ट देवी को प्रसन्न करने के लिए गाँव के लोगों को मारता और उनकी एक अंगुली काटकर ले जाता। गाँव के लोग उससे बहुत भयभीत थे। एक दिन उस गाँव में महात्मा बुद्ध आए। लोगों ने उन्हें अपना कष्ट बताया। लोगों के मना करने पर भी महात्मा बुद्ध जंगल में अंगुलिमाल के पास पहुँचे। उन्होंने अंगुलिमाल के सामने अपना शीश झुकाया। अंगुलिमाल ने जैसे उन्हें मारने के लिए हाथ उठाया, उसका हाथ हवा में ही अटका रह गया। यह जानने के बाद कि वे महात्मा बुद्ध हैं और वे एक निर्दोष के प्राण बचाने के लिए अपने प्राणों की बलि देने यहाँ आए हैं, अंगुलिमाल को अपने पापों का बोध हुआ। उसने महात्मा बुद्ध से क्षमा माँगी और उनसे उसे दंड देने को कहा। बुद्ध जी ने कहा, जिस व्यक्ति को अपने पापों का, अपनी गलतियों का बोध हो तो वही उसका प्रायश्चित होता है तथा दंड से बड़ी क्षमा है। गौतम बुद्ध ने अंगुलिमाल को अपनी शरण में ले लिया।

अध्यापन संकेत

पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चों से भी करवाएँ। उन्हें महात्मा बुद्ध के बारे में बताएँ। कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। बच्चों को गौतम बुद्ध के बचपन की 'हंस' पक्षी की रक्षा से जुड़ी कहानी भी संक्षिप्त रूप में सुनाई जा सकती है।

- ❖ समझाएँ कि हर बात या समस्या का हल लड़ाई-झगड़े से नहीं निकाला जा सकता। आपस में विचार-विमर्श द्वारा ही सही मार्ग का चुनाव संभव हो पाता है।
- ❖ सामान्य क्रिया तथा प्रेरणार्थक क्रिया समझाएँ। बताएँ कि जब कोई काम स्वयं न करके किसी दूसरे से करवाया जाता है, तब उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं क्योंकि इस क्रिया में दूसरे व्यक्ति को काम करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।